antarvimarshaH

अन्तर्विमर्शः

Document Information

Text title : Antarvimarshah

File name : antarvimarshaH.itx

Category : devii, aShTaka

Location : doc_devii

Author : Durgaprasad DvivedI

Transliterated by : Rajani Arjun Shankar

Proofread by : Rajani Arjun Shankar

Latest update : December 10, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 10, 2020

sanskritdocuments.org

अन्तर्विमर्शः

मूले दीपाङ्कुराकारामग्रे पद्मानुकारिणीम् ।
किरन्तीममृत-ज्योत्स्नां कलये बोध-सारिणीम् ॥ १॥

यातायात-पराक्रान्त-चक्रान्त-परिवर्तिनीम् ।
गाहे ज्ञप्ति-सुधा-सूतिं सिद्धि-साधन-वर्तिनीम् ॥ २॥

प्रत्यक्षी-क्रियते यान्तरसंप्रज्ञात-वर्त्मना ।
तां व्यामृशामि विश्वेशीं दहराकाश-रूपिणीम्म् ॥ ३॥

यदाज्ञया स्वस्व-कृत्ये पञ्च-भूतानि जाग्रति ।
तां सिद्धि-पाणि-ग्रहण-कल्याण-कलशीं स्तुवे ॥ ४॥

श्यामामपि परिस्फूर्जत्तडित्कान्त-कलेवराम् ।
वन्दे त्रिविग्रहां नाना-विग्रहामप्यविग्रहाम् ॥ ५॥

संसार-सर्प-सन्दष्ट-स्वास्थ्य-सम्पादनोद्यताम् ।
उद्यत्सान्द्र-दया-दृष्टि-दृष्ट-भक्त-कुलां श्रये ॥ ६॥

दुर्वासना-सरिन्मग्न-समुद्धरण-तत्पराम् ।
उपासे परमेशानीं स्थास्नु-सौहित्य-साधनीम् ॥ ७॥

अन्तरूर्ध्वमधो-विश्वग्विकसन्महिमाश्रयाम् ।
विद्यामविद्या-हतये प्रतिपद्ये महेश्वरीम् ॥ ८॥

ये चैकतान-मनसः समुदीरयन्ति दुर्गाप्रसाद-गदितं स्तव-रत्नमेतत् ।
तेऽन्तः-प्रमादमवहत्य समूल-घातं दुर्गा-प्रसादन-कृते प्रगुणीभवन्ति ॥ ९॥

इति श्रीदुर्गाप्रसादद्विवेदीविरचितः अन्तर्विमर्शः सम्पूर्णः ॥

Encoded and Proofread by Rajani Arjun Shankar

antarvimarshaH

pdf was typeset on December 10, 2020

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*